प्रथम अध्याय

शोध–परिचय

अध्याय – प्रथम

शोध परिचय

प्रस्तावना :

किसी भी राष्ट्र की उन्नति वहाँ की शिक्षा तथा स्वास्थ्य की समुचित व्यवस्था पर निर्भर करती है। शिक्षा को उद्देश्यपूर्ण और उपयोगी बनाने के लिये उसमें समयानुसार परिवर्तन होता है, जिससे बालक एवं बालिकाएँ राष्ट्र के विकास में अपनी भूमिका सकुशल निभा सकें। शरीर तथा मन और बुद्धि का विकास शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। शिक्षा यह निरन्तर चलने वाली क्रिया है। शिक्षा और शिक्षक का एक दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध है। शिक्षा किसी भी समाज के लिए प्राण है तथा जीवन मूल्य उसकी आत्मा। शिक्षा ज्ञान का वह अमूल्य अस्त्र है जो अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, जिससे सभ्यताएँ बनती हैं। संस्कृतियाँ परवान चढ़ती हैं, इतिहास लिखे जाते हैं। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति की अन्तर्निहित शक्तियों का सर्वांगीण विकास करना है। सर्वांगीण विकास का अभिप्राय शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, भावात्मक, सामाजिक तथा नैतिकता का विकास करना है। शिक्षा वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मानव की परिवर्तनशील शक्तियों को अच्छी आदतों द्वारा तथा कलात्मक ढंग से निकाले गये साधनों द्वारा पूर्णता प्रदान की जाती है तथा जिन साधनों का प्रयोग कोई भी व्यक्ति अपने या दूसरों की सहायता के लिए निर्दिष्ट उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए प्रयुक्त करता है।

बालक के सर्वांगीण विकास में शिक्षा को बड़ा ही महत्वपूर्ण कार्य करना पड़ता है। शिक्षक ही वास्तव में बालक का समुचित शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास कर सकता हैं विद्यालय प्रांगण में भी शिक्षक को महत्वपूर्ण भूमिक निभानी पड़ती है। सम्पूर्ण विद्यालय योजनाओं को वही व्यावहारिक रूप देता है, अच्छी से अच्छी शिक्षा शिक्षण पद्धति प्रभाव रहित हो जाती है यदि शिक्षक उसे सही ढ ाग से प्रयोग में न करे। जिस प्रकार विद्यालय जीवन में प्रधानाध्यापक मस्तिष्क के रूप में होता है, शिक्षक आत्मास्वरूप होता है, आत्मा के बिना शरीर निर्जीव होता है, शिक्षक ही विद्यालय जीवन का गतिदाता है।

भारतीय समाज में गुरू का स्थान सर्वोच्च स्थान है, क्योंकि वह शिक्षा के माध्यम से समाज को विकासोन्मुख बनाता है। अतः शिक्षा के उद्देश्य देशकाल और परिस्थिति के अनुसार परितर्वन होते रहते हैं, जो समाज की परिवर्तित आवश्यकताओं के पूरक होते हैं। शिक्षा हमें इस योग्य बनाती है कि परिस्थितियों के अनुरूप उचित निर्णय लेकर सही मार्ग का चयन करे और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न अवसरों पर सही विकल्प का चुनाव कर सकें।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

शिक्षा मानव के विकास की अंतिम व्यवस्था नहीं है, वह उसके व्यक्तित्त्व निर्माण की प्रथम सारणी है, जिस पर चढ़कर वह उन्नति के शिखर की ओर अग्रसर होता है। शिक्षा की सीढ़ी पर पैर रखने से पूर्व माँ की लोरियों, भाई-बहनों के संग खेल ही खेल में परिवार के परिप्रेक्ष के सूक्ष्म निरीक्षण तथा बाह्य समाज के संपर्क द्वारा अर्जित अनेक अनुभवों से निरन्तर सीखिता हुआ, किसी भी शिक्षण संस्था में प्रवेश पाने के पश्चात् भावों से विचारों की दुनिया में दाखिल होता है और विचारों का यह संसार उसके अर्जित ज्ञान की पसूति में सतत् वृद्धि करता रहता है। विचारों में परिपक्वता हेतु शिखा रूपी भवन की नींव सुदृढ़ होनी चाहिये।

इस नींव को सुदृढ़ करने हेतु शिक्षक रूपी कप्तान की आवश्यकता होती है। शिक्षा और शिक्षक का एक दूसरे से नजदीकी सम्बन्ध है।एक के बगैर दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती। शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया का मुख्य सूत्रधार होता है। समाज को शिक्षित करने में उसका महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षक के बिना शिक्षण की कल्पना करना संभव नहीं है। मुख्यता बालक का विकास प्राथमिक और विद्यालयीन जीवन में होता है। वहाँ पर शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। अतः शिक्षक के सम्बन्ध में अनेक विद्वानों ने अपने मत प्रकट किये हैं। शिक्षक को वह ऊँचा स्थान देते हैं। क्योंकि शिक्षण प्रक्रिया का मुख्य सूत्रधार शिक्षक ही होता है।

डॉ. जाकिर हुसैन के अनुसार "वास्तव में शिक्षक हमारे भविष्य भाग्य निर्माता है" समाज अपने ही विनाश पर उनकी अपेक्षा कर सकता है। प्रो. हुमायुं कबीर ने लिखा है शिक्षक राष्ट्र के भाग्य निर्णायक होते हैं। "वे ही पुनः निर्माण कुंजी हैं।"

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार, शिक्षक राष्ट्र के भाग्य के मार्गदर्शक हैं, शिक्षक बौद्धिक परम्पराओं तथा तकनीकी कौशलों की पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरण करने में धुरी का कार्य करता है। सभ्यता व संस्कृति का संरक्षक तथा परिमार्जनकर्ता है वह बालक का ही मार्गदर्शन नहीं वरन् सम्पूर्ण राष्ट्र का मार्गदर्शन है।

शिक्षक अपने समुचित शिक्षण से ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करते हैं, जो राष्ट्र की प्राप्ती के आधार होते हैं। अध्यापक का राष्ट्र की प्रगति में महत्वपूर्ण स्थान है। कहा भी जाता है कि "एक आदमी हत्या करके एक जीवन का अन्त करता है, किन्तु शिक्षक गलत शिक्षा देकर संपूर्ण परिवार की हत्या करते हैं तथा संपूर्ण राष्ट्र का अहित करते है।"

गारफोर्थ के शब्दों में "शिक्षक के माध्यम से ही संस्कृति पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती है। समाज की परम्परायें नवयुवकों को ज्ञात होती हैं, तथा वही नये एवं रचनात्मक उत्तरादायित्व ऊजायें छात्रों को सौंपता हैं।

समाज में प्रचलित शिक्षा का रक्षक भी शिक्षक ही होता है, वास्तव में कोई भी शिक्षा व्यवस्था शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं जा सकती, जिस स्तर के शिक्षक होंगे, उसी स्तर की शिक्षा व्यवस्था होगी। शिक्षा की गुणनात्मक स्थिति शिक्षकों की स्थिति तथा उनके गुणात्मक पहलू पर निर्भर है। वास्तव में बालक के शारीरिक मानसिक तथा सामाजिक व नैतिक विकास में शिक्षक बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। वह अपने सद्प्रयासों से बालक का सफल मार्गदर्शन कर उसके व्यक्तित्व का संतुलित विकास कर उसे सफल नागरिक बनाता है। इस रूप में वह न केवल बालक का ही कल्याण करता है, वरन् समूचे समाज तथा राष्ट्र की भलाई करता है। इसलिये तो भारतीय दर्शन में उसे ब्रम्हा का रूप दिया गया है। यह ब्रम्ह स्वरूप शिक्षक ही सृजनात्मक तथा विंध्वसात्मक शक्तियों का प्रदाता तथा स्त्रोत है। इसी की प्रदत्त शिक्षा के आधार पर हम कल्याणकारी तथा विनाशकाली शक्तियों का निर्माण करते हैं। इसलिये कहा जाता है कि यदि विनाश पर आ जाये तो शिक्षक एक चिकित्सक, भवन निर्माता तथा पुजारी से भी अधिक विनाश कर सकता है। एक अध्यापक के प्रभाव का कहां अंत होगा? कहा नहीं जा सकता, क्योंकि वह अपने छात्रों पर अपने प्रभावों की अमिट छाप छोड़ देता है।

प्रभावी शिक्षण क्या है?

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षण प्रभावशीलता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। गहन निरीक्षण व आलोचनात्मक विश्लेषण ही सम्पूर्ण शिक्षण कार्यक्रम की प्रभावशीलता की धुरी होती है और प्रत्यक्ष प्रभाव छात्रों में परिलक्षित होता है। शिक्षण प्रभाविता से अध्यापक की कार्यक्षमता व व्यवसाय के प्रति समर्पित दृष्टिकोण का विकास होता है। यहां प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि यहां प्रभावशीलता के विभिन्न घटकों को जोड़कर शिक्षण प्रभावशीलता का पता लगाने का प्रयास है, जबकि इन्हीं विभिन्न घटकों द्वारा ही शिक्षक की प्रभावशीलता में वृद्धि होकर उसमें ठोस परिवर्तन आता है, इसी से अध्यापक की कार्यक्षमता व व्यवसाय के प्रति समर्पित दृष्टिकोण का विकास होता है।

शिक्षा में शिक्षक, शिक्षार्थी व पाठ्यक्रम एक त्रिमुखी प्रक्रिया है, पाठ्यक्रम या विषयवस्तु के माध्यम से शिक्षक शिक्षार्थी में वांछित परिवर्तन लाने का प्रयास करता है, शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य अन्तक्रिया द्वारा ही अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ती होती है, शिक्षण प्रक्रिया के सफलता की सीमा का आधार शिक्षण व शिक्षार्थी की प्रकृति है। इन दोनों को सम्मिलित योग्यताओं तथा क्षमताओं आदि का प्रभाव इन प्रक्रिया की सफलता निर्धारित करता है। बालक जो कुछ सीखता है, उसका प्रभाव जहां एक ओर उसकी अमूर्त शक्तियों पर पड़ता है, वहीं उसका व्यवहार भी परिवर्तित होने लगता

है, शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा शिक्षार्थी में पाठ्यवस्तु ही स्थानांतरित नहीं की जाती अपितु शिक्षक अपने व्यक्तित्व की छाप भी छोड़ते हैं एक अच्छा शिक्षक छात्रों का प्रभावी मार्गदशन कर उन्हें अच्छा मानव बनाने का प्रयास करता है। उसमें अच्छे गुण अध्यारोपित करने का यथाशक्ति प्रयास करता है और वही शिक्षक प्रभावी शिक्षक कहलाने योग्य है, जो शिक्षण प्रक्रिया के दौरान निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये विषयवस्तु का शिक्षार्थी को अधिगम कराकर वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति के साथ उसमें अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन करने की क्षमता रखें।

शिक्षक प्रभावशीलता क्या है?

शिक्षक समाज और राष्ट्र के निर्माण का मूलाधार है। शिक्षक पर ही समाज की उन्नति निर्भर रहती है। शिक्षक बालकों को समुचित शिक्षा प्रदान कर देश के भविष्य को उज्जवल करता है। शिक्षक का महत्व अगाध है अवर्णनीय है प्राचीनकाल में शिक्षक को गुरू का स्थान दिया गया है। गुरू को भगवान तुल्य माना जाता या कहा जाता है कि –

गुरू ब्रम्हा गुरू विष्णु गुरू देवो महेश्वरा।
गुरू साक्षात् परब्रम्हा तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

गुरू को त्रिमूर्ति का दर्जा दिया गया है, ब्रम्हा जो ज्ञान का भंडार है, विष्णु ज्ञानदाता है और शिव ज्ञान का सदुपयोगीकर्ता है, विवेकानंद का कहना

है कि जो शिक्षक विद्यार्थियों के स्तर पर उतरकर उनकी आत्मा का परीक्षण करके शिक्षा देता है वही सच्चा शिक्षक है।

जवाहरलाल नेहरू के अनुसार चार प्रकार के शिक्षक होते हैं :-

1. सामान्य शिक्षक वह है जो केवल कहता है।
2. अच्छा शिक्षक वह है जो समझता है।
3. उत्तम शिक्षक वह जो प्रदर्शित करता है।
4. महान शिक्षक वह है जो विद्यार्थियों को प्रेरणा देता है।

भवन निर्माण में जो स्थान ईटों का है, राष्ट्र निर्माण में वही स्थान शिक्षक का है। शिक्षक में विभिन्न प्रकार की विशिष्टताएँ होनी चाहिए।

शिक्षक को अपने विषय का कुशल ज्ञाता होना चाहिये, नहीं तो समुचित शिक्षण नहीं कर सकेगा। अध्यापक का कर्तव्य है कि वह प्रमुख ग्रन्थों का गहन अध्ययन करें। प्रमुख ग्रन्थों का गहन अध्ययन किये बिना विषय के गुण और दोषों का ज्ञान बालाकें को प्रदान नहीं कर पायेगा।

शिक्षक के लिये आवश्यक है कि अपने विषय में कुशल होने के साथ-साथ उसे अन्य विषयों का भी ज्ञान होना चाहिये। तभी वह अपने अध्यापन में सह-सम्बन्ध का समावेश कर सकेगा। अपने अध्यापन में अन्य विषयों का समन्वय रोचकता और आकर्षण ले आता है।

अध्यापक को मनोविज्ञान का सम्यक ज्ञान होना चाहिये। मनोविज्ञान का ज्ञान होने पर अध्यापक स्तरानुकूल शिक्षण कर सकेगा। आधुनिक शिक्षण प्रणाली मनोविज्ञान का आधार लिये हुये है। अध्यापक इन मनोवैज्ञानिक आधार वाली पद्धतियों का प्रयोग तभी कर सकता है, जब उसे मनोविज्ञान का यथेष्ट ज्ञान हो तभी अध्यापक का शिक्षण रोचक आकर्षक और प्रभावपूर्ण हो सकेगा।

अध्यापक का शारीरिक, मानसिक और नैतिक स्तर उच्च होना चाहिये। उन्नत व्यक्त्वि वाला अध्यापक छात्रों को प्रभावित कर लेता है अच्छे व्यक्तित्व वाले अध्यापक की ओर बालक आकृष्ट होते हैं और उसके गुर्णे को अपने में जागृत करने का प्रयास करते हैं। अध्यापक में प्रेम, दया, बंधुत्व, सद्‌भावना, सहानुभूति का गुण होना चाहिये। शिक्षक प्रसन्नचित, हंसमुख होना चाहिये। मस्तिष्क सदैव खुला हुआ होना चाहिये। स्फूर्ति का होना भी बहुत जरूरी है।

शिक्षक का स्तर मधुर आकर्षक और प्रभावशाली होना चाहिये। अध्यापक को भावानुकूल स्वर का प्रयोग करना चाहिये। स्वर की अनुकूलता शिक्षण को रोचक बनाती है और छात्रों को प्रभावित करती है।

प्रभावशाली शिक्षण के लिये यह आवश्यक है कि अध्यापक को शिक्षण विधियों का ज्ञान हो, शिक्षक चाहे कितना ही बड़ा विद्वान और अपने विषय का ज्ञाता क्यों न हो, परन्तु वह तब तक समुचित शिक्षण नहीं कर सकता,

जब तक इसे उत्तम शिक्षक नहीं कहा जाता। शिक्षक को प्रा. शिक्षा के स्तर के लिये अनुकूल विषय के अनुसार आवश्यक विधियों का उपयोग करना होगा। शिक्षण विधि का अर्थ यह है कि शिक्षक अपने विचारों को विद्यार्थियों के उत्तम अभ्यास के लिये अभिव्यक्त करता है। यदि विद्यार्थी सुनने, देखने के बजाये स्वयं अपने हाथों से करेगा तो बहुत दिन तक उसे याद रहेगा और विशिष्ट अभ्यास होगा।

शिक्षक के लिये आवश्यक है कि वह भावों के अभिव्यक्तिगरण में कुशल और योग्य हो। यदि कोई शिक्षक विषय का ज्ञाता होने पर भी अपने भावों को प्रकट नहीं कर सकता, अनुभव से यह कुशलता बढ़ती है, निरन्तर प्रयत्न से यह कुशलता विकसित होती है।

शिक्षक के लिये नेतृत्व का गुण आवश्यक है, जिस शिक्षक में नेतृत्व की कुशलता होती है, वह बालकों को प्रभावित कर सकता है। शिक्षक यदि कुशल अभिनेता होगा तो वह छात्रों को अनुशासन में रख सकेगा।

आज की मनोवैज्ञानिक शिक्षण विधि की सफलता के लिये शिक्षक में सहयोग की भाव होना बहुत जरूरी है। क्रियाओं को करते समय छात्रों के सामने अनेक समस्याऐं आती हैं, तब वे सहयोग चाहते हैं शिक्षक को सहयोग, मार्गदर्शी, फेसिलिटेटर और दार्शनिक के जैसे व्यवहार करना पड़ता है।

छात्र उसी अध्यापक से अधिकाधिक सम्पर्क रखते हैं, जो उनके प्रति

सहानुभूति का प्रदर्शन करते हैं, ऐसे अध्यापकों के सामने अपनी समस्याओं को रखने में छात्र तनिक भी नहीं हिचकते और अध्यापक को छात्रों की समस्याओं से अवगत होना बहुत जरूरी है।

विभिन्न परिस्थितियों के अनुकूल अपने को बनाने की क्षमता का कुशलता को ही अनुकूलता कहते हैं। यदि अध्यापक परिस्थितियों के अनुकूल अपने को बना नहीं पायेगा तो उसे अपने काम में सफलता नहीं मिल पायेगी। अध्यापक के सामने विभिन्न रंग-रूप, विभिन्न योग्यता और विभिन्न समस्या वाले छात्र आते हैं, इस सब छात्रों से अच्छा सम्पर्क स्थापित करना होगा, जो अध्यापक आकृति में आकर्षक होता हैं, छात्रों से पर्याप्त सम्मान मिलता है।

एक सफल अध्यापक केवल अध्यापन में ही रूचि नहीं लेता वह सामुदायिक क्रियाऐं, समाज सेवा, सहयोगी, सहगामी क्रियाओं आदि सब में बराबर रूचि लेता है। रूचि विभिन्नता अध्यापक के लिये एक अनिवार्य गुण है।

छात्र उसी अध्यापक पर अधिक विश्वास रखते हैं, जिनके व्यवहार में एकरूपता होती है। क्षण में रूष्ट और क्षण में प्रसन्न होने वाला अध्यापक छात्रों से कभी भी सम्मान नहीं पाता।

एक अध्यापक को अपने काम के प्रति सदैव सावधान रहना चाहिये।

छात्रों की निगाहें हमेशा उनके ऊपर लगी रहती हैं, वह जो कुछ कक्षा में बोले वह नपातुला और निश्चित होना चाहिये।

एक अच्छा अध्यापक अपने कार्य के प्रति उत्साही होता है वह अपने विषय तथा शिक्षण प्रणालियों के सन्नध्य में अपने ज्ञान की वृद्धि करने में निरन्तर सावधान रहता है वह अपने ज्ञान को ताजा और समय के अनुसार बनाने के लिये उत्सुक रहता है।

वही अध्यापक अपने विचारों को छात्र के सामने व्यक्त कर सकता है, जो भाषण देने में निपुण होता है।

एक अध्यापक को हमेशा अपने कार्य की चिन्ता होनी चाहिये। अध्यापक की कार्य करने की लगन से छात्र प्रभावित होते हैं और एक अध्यापक अपनी ईमानदारी अपनी ईमानदारी का परिचय वह छात्रों के साथ किये जाने वाले व्यवहार अपने कर्तव्य तथा अन्य लोगों के सम्पर्क में आने पर ही दे सकता है।

एक सफल अध्यापक में आत्मविश्वास का होना नितान्त आवश्यक है।

समाज प्रगतिशील होता है, उसकी प्रगति के साथ ही साथ शिक्षक को भी प्रगतिशील होना चाहिये।

श्रवण एवं दृश्य साधनों के प्रयोग में रूचि :-

शिक्षक के लिये यह आवश्यक है कि उसकी प्रगति के साथ ही श्रवण दृश्य साधनों के सफल संचालन का ज्ञान होना चाहिये। साथ ही इन साधनों का प्रयोग करने में उसकी रूचि होना चाहिये। संस्कृति और सभ्यता का ज्ञान शिक्षक में होना चाहिये।

अध्यापक बालक को शिक्षा उसकी और समाज की आवश्यकताओं के अनुसार देता है, इसलिये उसे बालक और समाज दोनों की आवश्यकताओं का अध्ययन कर लेना चाहिये।

शिक्षक के पात्र में पर्याप्त परिवर्तन आ गया है, शिक्षक उपाधि का महत्व बढ़ गया है, शिक्षक के भुजस्कन्दों पर अनेकानेक कर्तव्य हैं, शिक्षक को न केवल विषय पढ़ना है बल्कि उन्हें मार्गदर्शन ऐसा सरलता एवं सरलीवत करना है।

शिशु केन्द्र विधियों को अपनाना ताकि बच्चे अनेक क्रियाओं में भाग लेकर विषय को पूर्ण रूप से समझ सके। आधुनिक दृश्यश्रत्य साधन सामग्री का विनियोग करना होगा। शिक्षक केवल पढ़ाना ही नहीं बाल्कि बच्चों को स्व-अध्ययन करने में सहायक बने। बच्चे को कान पकड़कर नहीं हाथ पकड़कर चलाना होगा।

उच्चशिक्षा प्रदान करने के लिये शिशु को केन्द्र बिन्दु बनाना होगा।

शिक्षा में शिक्षक शिक्षार्थी व पाठ्यक्रम एक त्रिमुखी प्रक्रिया है, पाठ्यक्रम या विषयवस्तु के माध्यम से शिक्षक शिक्षार्थी में वांछित परिवर्तन लाने का प्रयास करता है। शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य अन्तः क्रियायें द्वारा ही अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति होती है।

शिक्षण प्रक्रिया की सफलता की सीमा व आधार शिक्षण व शिक्षार्थी की प्रकृति है इन दोनों की सम्मिलित योग्यताओं तथा क्षमताओं आदि का प्रभाव इस प्रक्रिया की सफलता को निर्धारित करता हैं बालक जो कुछ सीखता है उसका प्रभाव जहां एक ओर उसकी अर्न्तशक्तियों पर पड़ता है वही उसका व्यवहार भी परिवर्तित होने लगता हैं शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा शिक्षार्थी में पाठ्यवस्तु ही स्थानान्तरित नहीं की जाती, अपितु शिक्षक अपने व्यक्तित्व की छाप भी छोड़ता है। एक अच्छा शिक्षक छात्रों को प्रभावी मार्गदर्शन कर उन्हें अच्छा मानव बनाने का प्रयास करता है, उसमें अच्छे गुण अधिरोपित करने का यथाशक्ति प्रयास करता है और वही शिक्षक प्रभावी शिक्षक कहलाने योग्य है, जो शिक्षण प्रक्रया के दौरान शिक्षार्थी को अधिगम कराकर वांछित उद्देश्यों की प्राप्ती के साथ उसमें अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन करने की क्षमता रखें।

समस्या का चयन :-

प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिक पहुंच और गुणवत्ता को सुधारने के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में हर एक किलोमीटर की दूरी पर एक प्राथमिक विद्यालय

स्थापित किया गया है। इन विद्यालयों में शिक्षण कार्य सम्पन्न कराने हेतु शिक्षकों की आवयकता हुई। अतः सरकार द्वारा पढ़े लिखे युवा को इस कार्य हेतु चुना गया। सरकार द्वारा निश्चित वेतन पर एक निश्चित सत्र के लिये कक्षा शिक्षण समपन्न कराने हेतु शिक्षकों को नियुक्त किया जाता है। अर्थात् निश्चित सत्र एवं वेतन पर नियुक्ति शिक्षक संविदा शिक्षक कहलाते हैं। संविदा शिक्षकों की नियुक्ति विभिन्न राज्यों में निम्न कारणों से किया जाता है।

1. प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौतिक पहुंच के लिये।
2. प्राथमिक शिक्षा के गुणवत्ता में सुधार के लिये।
3. हर एक किलोमीटर की दूरी पर स्कूल खोले जाने के कारण कार्यकुशल योग्य पढ़े-लिखे शिक्षकों की कमी को पूरा करने हेतु।
4. ग्रामीण क्षेत्रों में गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने के लिये।

कुछ राज्यों में संविदा शिक्षकों को एक निशचित समयाभाव के बाद नियमित शिक्षक के रूप में नियुक्त किये जाने का प्रावधान भी है। अतः यह माना जाता है कि संविदा शिक्षक नियमित शिक्षकों की तरह की निपुणता, लग्न और रूचि के साथ शिक्षण प्रक्रिया समपन्न करें। बच्चे, पर शिक्षक अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं, बच्चे शिक्षकों का अनुसरण भी करते हैं। अच्छा शिक्षक वही है जो निम्न कार्य सम्पन्न कर सकें।

- छात्रों का शैक्षिक एवं चारित्रिक विकास
- कक्षा का प्रबन्ध एवं समुचित शिक्षण देना
- छात्रों के कार्यों का मूल्यांकन करना।
- पाठ्यक्रमों सहभागी क्रियाओं का संचालन करना।
- सामाजिकता एवं नागरिकता की शिक्षा देना
- छात्रों का व्यावसायिक विकास करना।

संविदा शिक्षक क्या उपरोक्त कार्य का समापन, संचालन उचित तरीके से करने में सक्षम हैं? क्या ये शिक्षक अपना कार्य पूर्ण निपुणता से सम्पन्न करते हैं?

क्या संविदा शिक्षक का शिक्षण प्रभाव है? क्या संविदा शिक्षक बच्चों पर अपनी अमिट छाप छोड़ने में सक्षम हैं? संविदा शिक्षक का कक्षा शिक्षण कितना प्रभावी है या संविदा शिक्षक, नियमित शिक्षक से अधिक प्रभावी हैं? संविदा शिक्षकों की प्रभाविता का अध्ययन करना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है। अतः संविदा शिक्षक और नियमित शिक्षकों के शिक्षण प्रभाविता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

संविदा शिक्षों के शिक्षण से शिक्षण प्रक्रिया, शिक्षा तथा छात्रों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने हेतु इस समस्या का चयन किया गया।

समस्या कथन :-

"महाराष्ट्र राज्य के प्राथमिक विद्यालयों के संविदा शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन"।

शोध के चर - शोध समस्या में निम्न चर हैं।

आश्रित चर - शिक्षक प्रभाविता

स्वतंत्र चर - आयु, लिंग, अनुभव, शैक्षिक योग्यता।

समस्या का सीमांकन :

* इस अध्ययन में महाराष्ट्र के सात जिलों को शामिल किया गया है।
* इस अध्ययन में प्राथमिक विद्यालयों के मात्र सत्तर शिक्षकों को ही चुना गया है।
* इस अध्ययन में शिक्षक एवं शिक्षिकाओं दोनों का ही चयन किया गया है।
* इस अध्ययन में शासकीय विद्यालयों का ही चयन किया गया है।
* इस अध्ययन में संविदा नियुक्त शिक्षिकों का ही चयन किया गया है।
* इस अध्ययन में विवाहित, अविवाहित शिक्षकों का चयन किया गया है।
* इस अध्ययन में ग्रामीण शहरी क्षेत्र के स्कूलों का चयन किया है।

शोध के उद्देश्य :-

- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में लिंग के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में अनुभव के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में उम्र के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में योग्यता के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में वैवाहिक स्थिति के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।

शोध कार्य की परिकल्पनाए :-

- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में लिंग के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं है।
- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में अनुभवों के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं है।
- प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों ने उम्र के आधार पर शिक्षक प्रभाविता

में सार्थक अंतर नहीं है।

- प्राथमिक विद्यालयों के विषयों के आधार पर योग्यता शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं है।
- प्राथमिक विद्यालयों के क्षेत्र (ग्रामीण / शहरी) के आधर पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं है।
- प्राथमिक विद्यालयों के वैवाहिक स्थिति के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं है।